International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारत में डिजिटल कला का विकास

मनीष कुमार भट्ट[1], डॉ. रितेश जोशी[2]

[1]शोधार्थी, चित्रकला विभाग, गोविन्द गुरु जनजातीय विश्व विद्यालय बाँसवाड़ा
[2]सहायक आचार्य,चित्रकला विभाग, प्रभाशंकर पंड्या महाविद्यालय, परतापुर, बाँसवाड़ा (राजस्थान)

शोधसार:

भारत में डिजिटल कला की एक उल्लेखनीय यात्रा रही है, जो भारत में प्रौद्योगिकी के विकास और कलाकारों की रचनात्मक अभिव्यक्ति से प्रेरित है। इस शोध पत्र में भारत के समकालीन कला परिदृश्य में अभिव्यक्ति के नए माध्यम के रूप में डिजिटल कला की शुरुआत और इसकी विकासयात्रा पर चर्चा की गई है। प्रस्तुत शोध पत्र भारत में डिजिटल कला की पृष्ठभूमि, तकनीकी नवाचारों, भारतीय कलाकारों द्वारा किए गए योगदान, कलात्मक अभिव्यक्ति पर इसके प्रभाव का विश्लेषण करता है। साथ ही डिजिटल कला के प्रदर्शन में आने वाली समस्याओं और संभावनाओं पर प्रकाश डाला गया है।

मूख्य बिंदु - डिजिटल आर्ट, न्यू मीडिया आर्ट, भारतीय समकालीन कला, कंप्यूटर कला।

मूल शोध आलेख:

डिजिटल कला समकालीन भारतीय कला में कलात्मक अभिव्यक्ति के एक अभूतपूर्व रूप के रूप में उभरी है, जो पारंपरिक माध्यमों को आधुनिक डिजिटल उपकरणों और तकनीकों के साथ सहजता से प्रस्तुत करती है। इस क्रांतिकारी एकीकरण ने कलाकृतियों के निर्माण और प्रदर्शन को पूरी तरह से बदल दिया है, रचनात्मकता और नवीनता के लिए अनंत संभावनाओं का खुलासा किया है। हाल के वर्षों में, भारत की जीवंत कलात्मक विरासत में सरलता की एक अभूतपूर्व लहर देखी गई है, जो अद्वितीय कलात्मक अभिव्यक्तियों के लिए डिजिटल उपकरणों को अपनाने से प्रेरित है।

डिजिटल कला असल में कंप्यूटर आधारित (एल्गोरिथामिक, फ्रेक्टल्स) या उससे प्राप्त स्त्रोत (स्कैन फोटोग्राफ, ग्राफ़िक टेबलेट, ग्राफ़िक सॉफ्टवेयर) पर निर्भर होती हे।[1] डिजिटल तकनीक कलाकारों को विभिन्न पारंपरिक तकनीकों जैसे ड्राइंग, पेंटिंग और मिश्रित मीडिया के अनुसार कार्य करने की क्षमता

प्रदान करता है, तथा नई तकनीकों और डिजिटल माध्यम के लिए अद्वितीय दृश्य प्रभावों के साथ प्रयोग करने की सुविधा प्रदान करता है।

भारतीय समकालीन कला में डिजिटल कला का महत्व तेज़ी से बढ़ रहा हे, क्योंकि इसमें पारंपरिक कला और डिजिटल कला के क्षेत्रों को जोड़ने की विशेषता है। इसमें कलाकार डिजिटल तकनीक अपनाकर पारंपरिक कला के प्रभाव को संरक्षित कर सकते हैं। एक कलाकार अपने कलात्मक कौशल और डिजिटल उपकरणों के संयोजन से एक नवीन रचना बना सकता है, जो रंगों, संयोजनों और रचनाओं को सटीकता के साथ परिवर्तित करके अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति को एक नया आयाम देता है।

समसामयिक भारतीय कला की नवीन कला परंपराओं और इसकी बढ़ती तकनीकी बुनियादी ढांचे के परिणामस्वरूप डिजिटल पेंटिंग ने गति पकड़ ली है। डिजिटल पेंटिंग का विकास कला के बदलते परिदृश्य को दर्शाता है, जहां पारंपरिक कलाएं डिजिटल नवाचारों के साथ सह-अस्तित्व में हैं जो रचनात्मकता और कलात्मक अन्वेषण की सीमाओं को आगे बढ़ाती हैं।आज भारतीय समसामयिक कला वैश्विक कला परिदृश्य में एक विशेष स्थान रखती हे।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

भारत में डिजिटल पेंटिंग का आरम्भ कंप्यूटर के आगमन और 20वीं सदी के अंत में डिजिटल तकनीक के उद्भव से जुड़ी हैं। प्रारंभ में, डिजिटल कला की अवधारणा को उच्च लागत और डिजिटल उपकरणों की सीमित उपलब्धता के कारण संदेह और सीमित स्वीकृति के साथ पूरा किया गया था। हालाँकि, प्रौद्योगिकी की तीव्र प्रगति और पहुँच में वृद्धि के साथ, डिजिटल पेंटिंग ने धीरे-धीरे भारत में कर्षण प्राप्त किया।[2]

कला जब अपने समय से संवाद करती हे तो निश्चित ही उससे जुडी घटनाओं, परिघटनाओं को अपने में समाहित करके चलती हे। कंप्यूटर के इस दौर में जब विज्ञान और तकनीक का चारो और बोलबाला हे तो कला भी इससे अछूती कैसे रह सकती हे । स्वाभाविक सी बात हे, कला में भी कंप्यूटर प्रौद्योगीकी के जरिये कलाकार अपने आप को संप्रेषित करने का जतन करे और यह हर समय काल में होता ही रहा हे। वर्तमान समय सूचना प्रौद्योगीकी का हे। स्वाभाविक ही हे की कैनवास और कुंची का स्थान कंप्यूटर ने ले लिया हे परन्तु यह ऐसे ही है जैसे पुस्तकों के इन्टरनेट संस्करण और समाचार पत्रों के वेब संस्करण।[3]

भारत में डिजिटल कला का प्रथम उदहारण अप्रैल 1972 में NGMA (National Gallery of Modern Art), नई दिल्ली में और बाद में उसी वर्ष जहांगीर आर्ट गैलरी, मुंबई में आयोजित की गई प्रदर्शनी थी जिसमे व्हिटनी के डिजिटल एनिमेशन कार्यो के अलावा,150 से अधिक कलाकृतियाँ नई दिल्ली

शो का हिस्सा थीं, जिनमें कुछ अग्रणी कंप्यूटर ग्राफिक्स कलाकारों द्वारा किये गए कार्य भी शामिल थे।[4] 1980 और 1990 के दशक में, अग्रणी भारतीय कलाकारों ने कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए पेश की जाने वाली संभावनाओं की खोज करते हुए, डिजिटल उपकरणों के साथ प्रयोग करना शुरू किया। इन शुरुआती समय में प्रौद्योगी को अपनाने वालों ने, अक्सर सीमित संसाधनों के साथ काम करते हुए, भारत में डिजिटल कला परिदृश्य के विकास की नींव रखी। उन्होंने उभरती हुई डिजिटल सौंदर्यशास्त्र के साथ पारंपरिक कलात्मक तकनीकों को मिश्रित करने वाली कलाकृतियाँ बनाने के लिए डिजिटल माध्यमों और सॉफ़्टवेयर प्रोग्रामों को अपनाया।[5]

भारतीय कलाकारों द्वारा डिजिटल उपकरणों को धीरे-धीरे अपनाया हे और अपने काम को विकसित किया है। वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के प्रभाव के साथ अग्रणी प्रयासों ने देश में डिजिटल पेंटिंग की पहुंच और लोकप्रियता में योगदान दिया है। डिजिटल कला और पारंपरिक कला रूपों के एकीकरण ने एक गतिशील कला दृश्य को बढ़ावा दिया है जो भारत की समृद्ध कलात्मक विरासत को संरक्षित करते हुए प्रौद्योगिकी की संभावनाओं को आत्मसात करता हैं।

तकनीकी नवाचार और उपकरण:

भारत में डिजिटल पेंटिंग का विकास हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और डिजिटल प्लेटफॉर्म में प्रगति से काफी प्रभावित हुआ है। यहाँ कुछ प्रमुख तकनीकी नवाचारों और उपकरणों की चर्चा करते हे जिन्होंने देश में डिजिटल कला परिदृश्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ग्राफिक टैबलेट, उन्नत स्टाइलस और कलात्मक जरूरतों के अनुरूप परिष्कृत सॉफ्टवेयर प्रोग्राम के विकास ने कलाकारों को नए उपकरण और क्षमताएं प्रदान कीं। इन प्रगतियों ने डिजिटल माध्यमों के साथ अधिक प्राकृतिक और सहज बातचीत की अनुमति दी, जिससे कलाकारों के लिए पारंपरिक से डिजिटल कला में संक्रमण अधिक सहज हो गया।

डिजिटल टैबलेट और स्टाइलस:

KoalaPad TouchTablet

डिजिटल टैबलेट, जिसे ग्राफिक्स टैबलेट या पेन टैबलेट के रूप में भी जाना जाता है, कलाकारों को सटीक और नियंत्रण के साथ डिजिटल आर्टवर्क बनाने में सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन गोलियों में एक सपाट सतह होती है, जिस पर कलाकार स्टाइलस या पेन जैसी डिवाइस का उपयोग करके चित्र बना सकते हैं। स्टाइलस की दबाव संवेदनशीलता और सटीकता पारंपरिक ड्राइंग और पेंटिंग के अनुभव की नकल करते हुए प्राकृतिक और सहज स्ट्रोक की अनुमति देती है।[6]

दबाव के प्रति संवेदनशील स्टाइलस की शुरूआत डिजिटल कलाकारों के लिए गेम-चेंजर रही है। स्टाइलस टिप पर लागू दबाव के आधार पर लाइन की मोटाई और अपारदर्शिता को नियंत्रित करने की क्षमता डिजिटल कलाकृतियों में विस्तार और अभिव्यक्ति के स्तर को बढ़ाती है। इसके अतिरिक्त झुकाव संवेदनशीलता जैसी विशेषताएं कलाकारों को उनकी रचनात्मक प्रक्रिया में अधिक नियंत्रण और बहुमुखी प्रतिभा प्रदान करती हैं।

ग्राफिक सॉफ्टवेयर:

परिष्कृत ग्राफिक सॉफ्टवेयर प्रोग्राम के विकास ने डिजिटल पेंटिंग की संभावनाओं में क्रांति ला दी है। Adobe Photoshop, Corel Painter, Adobe Illustrator, Zpen, और Procreate जैसे सॉफ़्टवेयर एप्लिकेशन पारंपरिक कलात्मक माध्यमों और तकनीकों का अनुकरण करने वाले उपकरणों और कार्यात्मकताओं की एक विस्तृत श्रृंखला पेश करते हैं। कलाकार विभिन्न ब्रश, बनावट और प्रभावों के साथ प्रयोग कर सकते हैं जिससे उन्हें ऐसी कलाकृतियाँ बनाने की अनुमति मिलती है जो पारंपरिक चित्रों से मिलती-जुलती हों।[7]

परत-आधारित संपादन ग्राफ़िक सॉफ़्टवेयर की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता है। कलाकार अलग-अलग परतों पर काम कर सकते हैं जिससे वे आसानी से समायोजन कर सकते हैं, विभिन्न रचनाओं के साथ प्रयोग कर सकते हैं और पूरी कलाकृति को प्रभावित किए बिना तत्वों को जोड़ या हटा सकते हैं। इस लचीलेपन और गैर-विनाशकारी संपादन प्रक्रिया ने भारत में डिजिटल कलाकारों के लिए कार्यप्रवाह और प्रयोग के अवसरों में काफी वृद्धि की है।

संभावनाएं और प्रयोग:

डिजिटल तकनीक ने कलाकारों के लिए कई नई संभावनाओं को प्रस्तुत किया है, जिसे तलाशने के लिए उपकरणों, तकनीकों और दृश्य प्रभावों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान की है। कलाकार विभिन्न प्रकार के ब्रश, तान और रंगों की श्रंखला के साथ प्रयोग कर सकते हैं, जिससे अंतहीन विविधताओं और पुनरावृत्तियों की अनुमति मिलती है। वे अपने कार्यों को आसानी से पूर्ववत और फिर से कर सकते हैं,

प्रयोग और जोखिम लेने के स्तर को सक्षम करते हुए जो पारंपरिक माध्यमों से आसानी से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

इसके अलावा, डिजिटल पेंटिंग कलाकारों को एक ही कलाकृति के भीतर कई कलात्मक तकनीकों और माध्यमों को मूल रूप से संयोजित करने में सक्षम बनाती है। वे पारंपरिक पेंटिंग, ड्राइंग, फोटोग्राफी और ग्राफिक डिज़ाइन के तत्वों को मिश्रित कर सकते हैं, जिससे हाइब्रिड रचनाएँ बन सकती हैं जो कलात्मक अभिव्यक्ति की सीमाओं को आगे बढ़ाती हैं। विभिन्न कलात्मक शैलियों और माध्यमों को प्रयोग करने और एकीकृत करने की इस स्वतंत्रता ने भारतीय डिजिटल कला परिदृश्य में अद्वितीय और नवीन कलाकृतियों का उदय किया है।

कलाकृति में परिवर्तन और डिजिटल संपादन:

डिजिटल उपकरणों ने कलाकारों के लिए कलाकृति में परिवर्तन और संपादन को अधिक सुलभ और सुविधाजनक बना दिया है। ग्राफिक सॉफ़्टवेयर के साथ, कलाकार अपनी कलाकृति के तत्वों को आसानी से आकार बदल सकते हैं, और वांछित संरचना को प्राप्त करने के लिए सटीक समायोजन कर सकते हैं। कई परतों में काम करने की क्षमता गैर-विनाशकारी संपादन की अनुमति देती है, कलाकारों को मूल कलाकृति में परिवर्तन से समझौता किए बिना विभिन्न व्यवस्थाओं, रंग योजनाओं और दृश्य प्रभावों के साथ प्रयोग करने में सक्षम बनाती है।

डिजिटल पेंटिंग कलाकारों को डिजिटल प्रभाव, फिल्टर और संवर्द्धन शामिल करने का विकल्प भी प्रदान करती है जो नाटकीय रूप से कलाकृति के मूड और सौंदर्य को बदल सकते हैं। कलाकार प्रकाश, बनावट और विशेष प्रभावों के साथ प्रयोग कर सकते हैं जिससे दर्शकों के लिए एक अनूठा दृश्य अनुभव बन सकता है।

सहयोग और अन्तरक्रियाशीलता:

डिजिटल माध्यम ने भौगोलिक बाधाओं को पार करते हुए कलाकारों के बीच आपसी सहयोग और वार्तालाप की सुविधा प्रदान की है। कलाकार अपनी रचनात्मक दृष्टि और कौशल को मिलाकर एक ही कलाकृति पर सहयोग कर सकते हैं, जिससे कलात्मक तालमेल को बढ़ावा मिलता है। इस सहयोगी प्रक्रिया से विभिन्न दृष्टिकोणों, तकनीकों और सांस्कृतिक प्रभावों को मिलाने वाली कलाकृतियों का निर्माण हो सकता है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन समुदायों ने कलाकारों को व्यापक दर्शकों के साथ जुड़ने और वास्तविक समय में प्रतिक्रिया प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया है। कलाकार दर्शकों के साथ बातचीत कर सकते हैं, उनकी व्याख्याओं में अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं और दर्शकों की

प्रतिक्रियाओं के आधार पर अपने कलात्मक दृष्टिकोण को परिष्कृत कर सकते हैं। डिजिटल पेंटिंग की यह संवादात्मक प्रकृति कलाकारों और दर्शकों के बीच संबंध को बढ़ाते हुए एक गतिशील और आकर्षक कलात्मक अनुभव में योगदान करती है।

प्रामाणिकता और मौलिकता:

कलात्मक अभिव्यक्ति पर डिजिटल उपकरणों का प्रभाव भी डिजिटल कला की प्रामाणिकता और मौलिकता पर सवाल उठाता है। डिजिटल कलाकृतियों की प्रतिलिपियाँ तैयार करने और उनमे परिवर्तन करने में आसानी ने डिजिटल पेंटिंग्स की विशिष्टता और मूल्य के बारे में चिंताएं पैदा की हैं। हालांकि, कलाकार अपनी कलात्मक दृष्टि के व्यक्तित्व, डिजिटल पेंटिंग में शामिल तकनीकी कौशल और कलात्मक प्रक्रिया के दौरान रचनात्मक निर्णय लेने पर जोर देकर इन चुनौतियों का सामना करता हैं।

इसके अलावा कलाकार अक्सर अपनी डिजिटल कलाकृतियों को प्रमाणित करने के लिए रणनीतियाँ नियोजित करते हैं जैसे डिजिटल हस्ताक्षर, प्रामाणिकता के प्रमाण पत्र और सीमित संस्करण का उपयोग करना। इन उपायों का उद्देश्य डिजिटल पेंटिंग्स के मूल्य और मौलिकता को स्थापित करना है।

डिजिटल उपकरणों का भारत में डिजिटल पेंटिंग में कलात्मक अभिव्यक्ति पर परिवर्तनकारी प्रभाव पड़ा है। कलाकारों ने डिजिटल पेंटिंग द्वारा पेश किए गए प्रयोग, हेरफेर और सहयोग के लिए विस्तारित संभावनाओं को अपनाया है। ग्राफिक सॉफ्टवेयर परतों और डिजिटल प्रभावों के उपयोग ने अभूतपूर्व कलात्मक स्वतंत्रता और रचनात्मकता की अनुमति प्रदान की है। जबकि प्रामाणिकता के आसपास की बहसें बनी रहती हैं। कलाकार अपनी अनूठी कलात्मक दृष्टि पर जोर देकर और अपनी डिजिटल कलाकृतियों को प्रमाणित करने के लिए रणनीतियों को नियोजित करके इन चुनौतियों का सामना करते हैं। कुल मिलाकर डिजिटल पेंटिंग ने भारत में कलात्मक अभिव्यक्ति को समृद्ध किया है जिससे कलाकारों को नए क्षितिज तलाशने और नवीन और मनोरम कलाकृतियां बनाने में मदद मिली है।

डिजिटल दायरे में भारतीय कलाकार

भारतीय कलाकारों ने अपनी प्रतिभा, रचनात्मकता और अद्वितीय कलात्मक दृष्टिकोण का प्रदर्शन करते हुए डिजिटल पेंटिंग परिदृश्य में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। डिजिटल कलाकारों को बढ़ावा देने और समर्थन करने में भारतीय कला संस्थानों, दीर्घाओं और ऑनलाइन प्लेटफार्मों की भूमिका का महत्वपूर्ण स्थान रहा हे। कुछ प्रसिद्ध भारतीय डिजिटल कलाकारों तथा उनकी विशिष्ट शैलियाँ इस प्रकार हैं।

प्रसिद्ध भारतीय डिजिटल कलाकार:

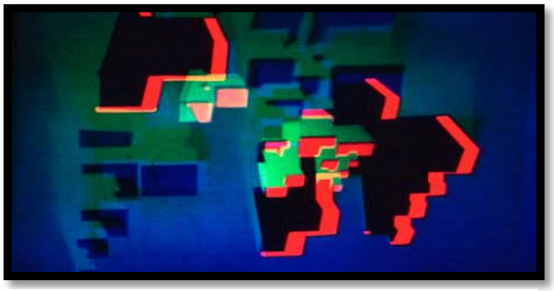

Nalini Malini-Dream Houses (Variation I)1969

भारतीय डिजिटल कलाकारों ने देश के भीतर और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर पहचान हासिल की है। उनकी कलाकृतियाँ अक्सर पारंपरिक भारतीय कला रूपों और समकालीन डिजिटल सौंदर्यशास्त्र के मिश्रण को दर्शाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप नेत्रहीन मनोरम और वैचारिक रूप से समृद्ध रचनाएँ होती हैं।

एक उल्लेखनीय भारतीय डिजिटल कलाकार **नलिनी मालानी** (जन्म 19 फरवरी 1946) हे, जो एक समकालीन भारतीय कलाकार हैं, जिन्हें व्यापक रूप से वीडियो कलाकारों की देश की पहली पीढ़ी में माना जाता है। वह थिएटर, वीडियो, इंस्टॉलेशन के साथ-साथ मिश्रित मीडिया पेंटिंग और ड्राइंग सहित कई माध्यमों के साथ काम करती है। उनके कार्यों के विषय भारत के विभाजन के बाद प्रवासन के उनके अनुभव से गहराई से प्रभावित हैं। तत्पश्चात, नारीवादी मुद्दों को दबाना भी उनके रचनात्मक उत्पादन का एक हिस्सा बन गया। मालानी ने एक दृश्य भाषा विकसित की है जो प्रतिष्ठित है, स्टॉप मोशन, इरेज़र एनीमेशन, रिवर्स पेंटिंग और हाल ही में डिजिटल एनीमेशन से आगे बढ़ रही है जहां वह सीधे अपनी उंगली से टैबलेट पर खींचती है।[8]

मलानी ने अपना पहला वीडियो वर्क 'ड्रीम हाउस' (1969) दिवंगत कलाकार अकबर पदमसी द्वारा बॉम्बे (मुंबई) में प्रायोगिक बहु-विषयक कलाकार कार्यशाला विज़न एक्सचेंज वर्कशॉप (VIEW) की सबसे कम उम्र और एकमात्र महिला प्रतिभागी के रूप में बनाया। उनके कार्यों को दुनिया भर के प्रसिद्ध संग्रहालयों में प्रदर्शित किया गया है, जिसमें एम्स्टर्डम में स्टेडेलिज्क संग्रहालय और न्यूयॉर्क में आधुनिक कला संग्रहालय शामिल हैं।

MASSIVE CREATIVE MURAL by Artist Ranbir Kaleka in the lobby of the newly opened Ritz Carlton hotel in Pune

रणबीर कालेका (जन्म 1953): नई दिल्ली में स्थित एक समकालीन भारतीय मल्टी-मीडिया कलाकार हैं, जिनका काम अक्सर जानवरों, कामुकता और परंपरा के विषयों पर केंद्रित होता है। प्रारंभिक रूप से एक चित्रकार के रूप में प्रशिक्षित, उनके काम में प्रयोगात्मक फिल्म कथा दृश्यों के भीतर द्वि-आयामी कैनवास को तेजी से एनिमेटेड किया गया है और प्रमुख अंतरराष्ट्रीय गैलरी और संग्रहालय स्थानों की एक श्रृंखला में प्रदर्शित किया गया है।[9]

राघव केके: एक युवा कलाकार हे 2010 में सीएनएन की दस आकर्षक विचारकों, लेखकों और उत्तेजक लोगों की सूची में शामिल, राघव का काम पेंटिंग, स्थापना और प्रदर्शन के पारंपरिक रूपों का पता लगाता है, जबकि उनका अभ्यास नए मीडिया (कृत्रिम बुद्धिमत्ता, न्यूरो-फीडबैक, बायोहाकिंग, बोर्ड और वीडियो गेम, क्रिप्टो मुद्राओं) को गले लगाता है। आदि), मानव के बाद की समकालीन वास्तविकताओं को व्यक्त करने के लिए। 5 टेड वार्ता सहित उनके व्याख्यान, दर्शकों को कला का उपयोग करके अपने सामाजिक और मनोवैज्ञानिक स्वयं का विस्तार करने के लिए प्रेरित करने के लिए जाने जाते हैं। नेटफ्लिक्स ने क्रिएटिव इंडियंस सीरीज़ में राघव पर एक एपिसोड लॉन्च किया था।[10]

भारतीय कला संस्थान और गैलरी:

भारतीय कला संस्थानों और दीर्घाओं ने डिजिटल कलाकारों को बढ़ावा देने और समर्थन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान (एनआईडी), सृष्टि स्कूल ऑफ आर्ट, डिजाइन और टेक्नोलॉजी, और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड एस्थेटिक्स जैसे संस्थान डिजिटल कला प्रथाओं को शामिल करने वाले कार्यक्रमों और पाठ्यक्रमों की पेशकश करते हैं।

भारत भर में गैलरी और कला स्थलों ने भी डिजिटल कला को अपनाया है और डिजिटल कलाकारों को अपने कार्यों को प्रदर्शित करने के लिए मंच प्रदान करते हैं। देवी आर्ट फाउंडेशन, काला घोड़ा कला महोत्सव और इंडिया आर्ट फेयर कुछ ऐसे प्लेटफॉर्म के उदाहरण हैं जिन्होंने डिजिटल कलाकृतियों का प्रदर्शन किया है और भारतीय डिजिटल कलाकारों को एक्सपोजर प्रदान किया है।

चुनौतियां और अवसर

भारत में डिजिटल पेंटिंग कलाकारों के लिए चुनौतियां और अवसर दोनों प्रस्तुत करती है। यहाँ हम डिजिटल कलाकारों के सामने आने वाली कुछ प्रमुख चुनौतियों की जांच करते है और व्यापक पहुँच, सहयोग और व्यावसायिक संभावनाओं के संदर्भ में डिजिटल पेंटिंग द्वारा पेश किए जाने वाले अवसरों की पड़ताल करते है।

सामाजिक स्वीकृति और मान्यता:

भारत में डिजिटल कलाकारों के सामने आने वाली चुनौतियों में से एक वैध कला के रूप में डिजिटल कला की सामाजिक स्वीकृति और मान्यता है। पारंपरिक कला रूपों का भारत में एक गहरा इतिहास और सांस्कृतिक महत्व है जो कभी-कभी डिजिटल पेंटिंग के उभरते हुए क्षेत्र पर हावी हो सकता है। डिजिटल कला में शामिल कलात्मक मूल्य और तकनीकी कौशल के बारे में जनता और कला के प्रति उत्साही लोगों को शिक्षित करना इसकी स्वीकृति और मान्यता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण है।

कॉपीराइट और बौद्धिक संपदा मुद्दे:

डिजिटल कला कॉपीराइट उल्लंघन और बौद्धिक संपदा के मुद्दों के लिए अतिसंवेदनशील है, जो भारत में डिजिटल कलाकारों के लिए चुनौतियां खड़ी कर रही है। डिजिटल कलाकृतियों को ऑनलाइन कॉपी करने और वितरित करने में आसानी के कारण कलाकारों को अपनी मूल कृतियों की सुरक्षा के बारे में सतर्क रहना आवश्यक हो जाता है। कॉपीराइट कानूनों को नेविगेट करने, लाइसेंस देने और डिजिटल कलाकृतियों के उचित श्रेय के लिए सावधानीपूर्वक ध्यान देने और कानूनी समझ की आवश्यकता होती है।

डिजिटल डिवाइड और प्रौद्योगिकी तक पहुंच:

प्रौद्योगिकी और इंटरनेट कनेक्टिविटी तक पहुँच में असमानता की विशेषता वाला डिजिटल डिवाइड भारत में डिजिटल कलाकारों के लिए मुख्य चुनौती है। कंप्यूटर, ग्राफिक टैबलेट और हाई-स्पीड इंटरनेट तक सीमित पहुंच डिजिटल पेंटिंग में कलाकारों की वृद्धि और भागीदारी में बाधा बन सकती है। अधिक समावेशी डिजिटल कला दृश्य को बढ़ावा देने के लिए सस्ती और सुलभ प्रौद्योगिकी प्रदान करना आवश्यक है।

कलाकारों के लिए अवसर:

व्यापक पहुंच और वैश्विक दर्शक:

डिजिटल माध्यम कलाकारों को व्यापक दर्शकों तक अपनी कलाकृति दिखाने का अवसर प्रदान करती है। वर्तमान में सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और ऑनलाइन आर्ट गैलरी कलाकारों को अपने आर्टवर्क को वैश्विक दर्शकों के साथ साझा करने में सक्षम बनाती हैं। डिजिटल माध्यम भी कलाकारों को कला के प्रति उत्साही प्रशंसको, खरीददारों और दुनिया भर के संभावित सहयोगियों से जुड़ने की सुविधा प्रदान करता है।

सहयोग और नेटवर्किंग:

डिजिटल माध्यम भारत और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कलाकारों के बीच सहयोग और नेटवर्किंग के अवसर प्रदान करती है। ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म, फ़ोरम और समुदाय कलाकारों को जोड़ने, विचारों को साझा करने और परियोजनाओं पर सहयोग करने में सक्षम बनाते हैं। यह सहयोगी वातावरण कलात्मक विकास को बढ़ावा देता है, कलात्मक क्षितिज का विस्तार करता है और ज्ञान और तकनीकों के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है।

वाणिज्यिक संभावनाएँ और ऑनलाइन मार्केटप्लेस:

डिजिटल क्षेत्र भारत में डिजिटल कलाकारों के लिए व्यावसायिक संभावनाएं प्रस्तुत करता है। डिजिटल आर्ट को समर्पित ऑनलाइन मार्केटप्लेस और प्लेटफॉर्म, जैसे आर्टस्टेशन और ईटीसी, कलाकारों को अपने डिजिटल आर्टवर्क, प्रिंट या व्यावसायिक उपयोग के लिए अवसर प्रदान करते हैं। कलाकार एक वैश्विक बाजार तक पहुँच सकते हैं और संभावित रूप से अपनी डिजिटल कृतियों से आय अर्जित कर सकते हैं।

सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्रचार:

डिजिटल कलाकृतियों को बढ़ावा देने और प्रदर्शित करने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म शक्तिशाली उपकरण बन गए हैं। कलाकार इंस्टाग्राम, फेसबुक और बेहंस जैसे प्लेटफॉर्म का लाभ उठाकर ऑनलाइन उपस्थिति बना सकते हैं, फॉलोइंग हासिल कर सकते हैं और कला के प्रति उत्साही लोगों से जुड़ सकते हैं। सोशल मीडिया की वायरल प्रकृति भी कलाकृतियों के बड़े दर्शकों तक पहुंचने की क्षमता को बढ़ाती है, जिससे सहयोग या प्रदर्शनियों के लिए मान्यता और अवसर बढ़ते हैं।

जहाँ भारत में डिजिटल पेंटिंग सामाजिक स्वीकृति, कॉपीराइट मुद्दों और डिजिटल विभाजन जैसी चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है वहीं यह कई अवसर भी प्रदान करती है। डिजिटल कलाकार व्यापक दर्शकों तक पहुंच सकते हैं, साथी कलाकारों के साथ सहयोग कर सकते हैं व्यावसायिक संभावनाओं का पता लगा सकते हैं और प्रचार के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का लाभ उठा सकते हैं। चुनौतियों का समाधान करके, अवसरों को गले लगाकर, और डिजिटल पेंटिंग के कलात्मक मूल्य की वकालत करके भारतीय डिजिटल कलाकार देश में डिजिटल कला के विकास और पहचान में योगदान दे सकते हैं।

निष्कर्ष:

इस शोध पत्र में इतिहास, तकनीकी नवाचारों, कलात्मक प्रभाव और भारतीय कलाकारों के विशिष्ट योगदान के माध्यम से इसके प्रक्षेप पथ का अनुसरण करते हुए, इस विकास को प्रेरित करने वाले विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। कलात्मक अभिव्यक्ति में डिजिटल उपकरणों के एकीकरण ने संभावनाओं के एक ऐसे आयाम का निर्माण किया है जो पहले पारंपरिक माध्यमों से अप्राप्य था। इस परिवर्तन ने कलाकारों को नवीन प्रयोग करने और भौगोलिक सीमाओं से परे सहयोगी प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए सशक्त बनाया है। हालाँकि, इसके साथ-साथ, डिजिटल कला की प्रामाणिकता और मौलिकता को लेकर चर्चा जारी है। भारत में डिजिटल पेंटिंग के बढ़ते परिदृश्य को भारतीय कलाकारों की अनूठी छाप से परिभाषित किया गया है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि भारत में डिजिटल पेंटिंग का विकास एक बहुआयामी यात्रा है, जो तकनीकी गति, कलात्मक प्रयोग और व्यक्तियों और संस्थानों की समान प्रतिबद्धता से आकार लेती है। जैसे-जैसे डिजिटल संभावनाओं का कैनवास फैलता है, आगे के विकास और अन्वेषण की संभावना असीमित बनी रहती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. डॉ. कृष्णा महावर, नविन कला प्रवृत्तियाँ (New art trends),2019 पृष्ठ सं. 66
2. https://en.wikipedia.org/wiki/Nalini_Malani
3. https://www.ndtv.com/offbeat/artist-uses-ai-to-generate-selfies-from-the-past-results-leave-internet-stunned-3879271
4. https://amp.scroll.in/magazine/1017629/what-did-the-cold-war-have-to-do-with-a-computer-art-exhibition-sent-to-india-in-the-1970s
5. राजेश कुमार व्यास : 'कला, कला का समय और रचनात्मक मूल्य', कैनवास (अंक -1), 2011, पृ. 17
6. https://www.computerhope.com/jargon/g/graptabl.htm
7. कु. प्रियंका धुन्धवाल : डिजिटल कला एवं तकनीक : दृश्य कला क्षेत्र में योगदान व मनोवैज्ञानिक प्रभाव (अप्रकाशित शोध ग्रन्थ), पृ. 86
8. Christine Vial Kayser: Nalini Malani, aglobal storyteller, Studies in Visual Arts and Communication: an international journal, Vol 2, No 1 (2015) on-line

9. Saskia Miller: Being Human: Ranbir Kaleka's Latest Works Create Meaning through Painting, Video Projection, Successes and Failures, Freie Universitaet Berlin Summer Semester 2005
10. https://volte.art/artists/39-raghava-kk/